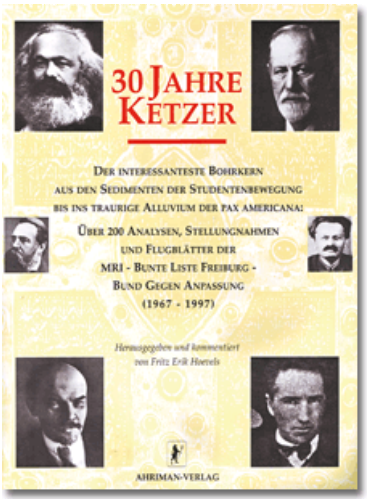
Alliance against Conformity

Birth Control – Reduction of Working Hours – Equality Worldwide

हिन्दी

2026

"अनुरूपता के विरुद्ध गठबंधन" क्या है और इसके लक्ष्य क्या हैं?



» अनुरूपता के विरुद्ध गठबंधन « (एक तरह से कहा जाए तो » Gleichschaltung के विरुद्ध«) काफी लंबे समय से मौजूद है। इसकी स्थापना आज की तुलना में बेहतर (और इस प्रकार, दुर्भाग्यवश, अधिक बेपरवाह और भ्रमों से भरे) समय में हुई थी। इच्छुक लोग इसके उद्गम और उद्देश्यों के बारे में दस्तावेज़ संग्रह »30 Jahre Ketzer« में आसानी से जान सकते हैं, जो सबसे बढ़कर इसके उद्देश्यों की निरंतरता को दर्शाता है। यह निरंतरता आज तक बनी हुई है।

जिसके बेहतर समय में इसकी स्थापना हुई थी, उसकी एकमात्र आशाजनक परिस्थितियाँ आज काफी खराब परिस्थितियों में बदल गई हैं। इस पूर्वानुमेय गिरावट के कुछ शिकार - क्योंकि 1970 और 1980 के दशक जैसी कुछ उपलब्धियों को स्थिर करने के सभी अवसर बर्बाद और नष्ट कर दिए गए थे - इस गिरावट से अच्छी तरह वाकिफ हैं (और इसलिए कम से कम AfD या उसके गैर-जर्मन समकक्षों को वोट देते हैं, अर्थात्, घिनौनी, गुटबंदी करने वाली, और पूरी तरह से अमेरिकी-गिगा-पूंजी-निर्भर और अनुपालक कार्टेल पार्टियों की तुलना में छोटी बुराई), जो कि एक निश्चित सुधार है। बाकी लोग डरकर अपना सिर रेत में छिपा लेते हैं (या »मीडिया« के हाथ से ही खाते हैं, जो तीसरे राइख की तुलना में भी अधिक सरलीकरण हैं) और अपने जीवन की अधिकांश मूल्यवान और महत्वपूर्ण चीजों से वंचित होने को भाग्यवाद के साथ सहन करते हैं: उनकी थाली से गायब हो गया मांस, उनके पैरों तले से छीनी गई कार, चोरी की गई हीटिंग, और ऊपर से, अधिकारी उनसे घिनौनी-मीठी भाषा में ताना मारते हैं, हुकुम चलाते हैं, और झूठ बोलते हैं।

हम उन सभी को इक्कट्ठा करना चाहते हैं जो इसके खिलाफ लड़ना चाहते हैं और बौद्धिक अनुशासन बनाए रखना या प्राप्त करना चाहते हैं।

मार्क्स और एंगेल्स ने बहुत सारे लोगों के अनावश्यक रूप से दुखद जीवन और बहुत ही कम लोगों के शानदार जीवन का मुख्य कारण जनसमूह की संपत्तिहीनता और जीवन की भौतिक आधारभूत संरचनाओं पर बहुत कम लोगों के विशाल स्वामित्व में देखा, जो उन्हें बहुत सारे लोगों को ब्लैकमेल करने में सक्षम बनाता है - यह ब्लैकमेल बिना बहुत अधिक शब्दों के सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित है “मैं जो कुछ भी "समान" के रूप में वेतन दूँ, उसके लिए काम करो, या मर जाओ।“ मार्क्स और एंगेल्स इस बारे में सही थे, आज पहले से कहीं ज़्यादा - लगभग पूरी दुनिया लगभग पाँच सौ अमेरिकी अरबपतियों के स्वामित्व में है या उनके नियंत्रण में है, जो शेयरधारिता के माध्यम से, विशेष रूप से »मीडिया« और, अप्रत्यक्ष रूप से उनके माध्यम से, चुनाव परिणामों और इस प्रकार सरकारों और उनके सत्ता के तंत्रों पर, कम से कम पृथ्वी की सतह के बहुत बड़े हिस्से पर, हावी हैं। हालाँकि, तब से एक और मौलिक बुराई उभर आई है जिसे मार्क्स और एंगेल्स ने कम आँका था: ग्रह अतिभर चुका है। मौजूदा (या यूँ कहें कि बचे हुए – तेल तो लगभग खत्म हो चुका है) संसाधनों के साथ, सभी के लिए, या कम से कम अधिकांश लोगों के लिए, एक अच्छा जीवन अब संभव नहीं है।

मानव आबादी को ग्रह के लिए टिकाऊ स्तर तक कम करना – जिसके लिए अब एक-बच्चे वाले परिवारों की लगभग पाँच पीढ़ियों की आवश्यकता होगी – हालांकि, विश्व स्तर पर एक सामान्य रूप से अच्छी ज़िंदगी के लिए भौतिक परिस्थितियाँ

पैदा करेगा, यहाँ तक कि कई लोगों के लिए यह वर्तमान जीवन से अकल्पनीय रूप से बेहतर होगा, एक ऐसा जीवन जो दिन-प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है – बस खाद्य कीमतों और पार्किंग स्थानों के गायब होने को देखें। (काश मानव जाति ने इस वैश्विक एक-बच्चा परिवार नीति को पहले ही शुरू कर दिया होता – मान लीजिए, जब ग्रीन पार्टी की स्थापना हुई थी या उससे थोड़ी देर बाद – तो राहत पहले ही बहुत बड़ी होती!) यह बिंदु पूरी तरह से इस बात से स्वतंत्र है कि मौजूदा संसाधन कैसे वितरित किए गए हैं: यदि स्थान और संसाधनों को दस गुना कम लोगों के बीच साझा किया जाए, तो हर कोई आसानी से दस गुना अधिक प्राप्त कर सकता है। वितरण की विधि निस्संदेह महत्वपूर्ण है, लेकिन इस संदर्भ में गौण है। हालांकि, इस समय भी, सबसे न्यायसंगत वितरण सभी के लिए अच्छा परिणाम नहीं ला सकता, क्योंकि ग्रह को फुलाया नहीं जा सकता (और इसके कच्चे माल को तो बिलकुल भी नहीं)।

चीन ने केवल एक पीढ़ी में एकल-संतान परिवारों के माध्यम से गरीबी की गहराइयों से मामूली लेकिन ठोस समृद्धि तक का सफर तय किया; इस लाभकारी उपाय के बिना कोई भी कल्पनीय आर्थिक प्रणाली इस गणितीय दुष्चक्र को तोड़ नहीं सकती थी।और, एक कम-ज्ञात तथ्य: अपनी छोटी आबादी के कारण, दशकों तक उत्तर कोरिया का जीवन स्तर दक्षिण कोरिया से ऊँचा था, जो अमेरिकी हाथों में चला गया था। फिर अचानक, अमेरिकी निर्णय-निर्माताओं ने भी एक-संतान परिवार के लाभ को खोज निकाला, को रिया के अपने हिस्से में गर्भ निरोधक गोलियाँ वितरित कीं, अपने आश्रित राज्य के विदेशी व्यापार में बाधा नहीं डाली - बल्कि उसके उत्तरी समकक्ष के व्यापार में और भी अधिक बाधा डाली - और देखो तो ज़रा: देश के दोनों हिस्सों के बीच जीवन स्तर का अनुपात उलट गया। यह इतना सरल है - उन्हें आपकी आँखों में धूल झोंकने मत दो!! (मीडिया का यही काम है, और अब स्कूलों का भी।)

“ग्रीन्स” शुरू से ही एक दिखावा थे: उन्हें प्रकृति या “पर्यावरण” की कोई लेना देना नहीं था, क्योंकि उन्होंने हमेशा जन्म नियंत्रण और, बेशक, आप्रवासन प्रतिबंधों से दूर रहे; केवल इस विषय में – लेकिन पूरी तरह से संकीर्ण और उलझे हुए तरीके से – परहेज, परहेज, परहेज (या त्याग, त्याग, त्याग), और पितृसत्तावाद, पितृसत्तावाद, पितृसत्तावाद के बहाने। लेकिन भले ही काफी लोग धीरे-धीरे "हरित" बेईमानी और दुर्भावना को समझ रहे हैं, जर्मनी में मौजूद एकमात्र कायर – और फिर भी बदनाम और सताया गया – विपक्ष, यानी AfD (Alternative for Germany), इस मौलिक आलोचना को कभी नहीं उठाता और किसी व्यापक रणनीति से बचता है। लेकिन श्री सोरोस, गेट्स, रॉकफेलर, प्यू आदि की अमेरिकी मेगा-पूंजी के पास ऐसी रणनीति है: अपनी ही लाभ के लिए और अपने शासन को बनाए रखने के लिए, पूरे विश्व की आबादी को मताधिकार से वंचित करना – जिसमें पुराने औद्योगिक राष्ट्रों के लिए कोई विशेष रियायत नहीं है। इस उद्देश्य के लिए भीड़ जुटाना उपयोगी है; जो लोग केवल एक-दूसरे की राह में बाधा डालते हैं और जिन्हें अगले दिन और आने वाली सर्दियों के बारे में सोचना पड़ता है, वे अपनी गरिमा, तर्क और सहनशक्ति खो देते हैं। यही उनके तथाकथित 'फाउंडेशनों' के आकाओं और मालिकों का सटीक लक्ष्य है। यह प्रवासन काल के अंत के सामंती स्वामियों के लक्ष्य जैसा है – जिनका 'माध्यम' चर्च था और जो बहुत प्रभावी था – और उन्होंने अपनी शक्ति और अपने दासों को एक हजार से अधिक वर्षों तक बनाए रखा, जब तक कि फ्रांसीसी क्रांति ने इसे समाप्त नहीं कर दिया। (इसीलिए आज इसकी निंदा की जाती है।)

हमारे अत्यधिक प्रशंसित "मुक्त लोकतांत्रिक मूल व्यवस्था (fdGO)" को सर्वोत्तम रूप से "अधिकतम बेईमानी की व्यवस्था" के रूप में वर्णित किया जा सकता है। बेशक, यही बात किसी भी धर्म के बारे में कही जा सकती है, चाहे उसके वेतनभोगी प्रतिनिधि स्वयं अपनी तर्कशक्ति खो चुके हों या केवल पाखंडी हों। (यह पत्रकारों, "टॉकशो होस्ट्स," आदि पर भी लागू होता है।) केवल एक मजबूत मन, जो तर्क में अभ्यास और मौलिक ज्ञान (जैसे, अणु क्या है? गुणसूत्र क्या है? CO2 चक्र क्या है? प्रवासन काल क्या था, दासप्रथा क्या थी, मानवाधिकार और फ्रांसीसी क्रांति कैसे जुड़े हैं? – इन सभी मामलों में, स्कूल आमतौर पर बहुत कम मदद करता है), मध्य युग के अधिप्रचार का विरोध कर सकता है। कम से कम बौद्धिक रूप से, लेकिन यह शुरुआत है (और तब भी यह पहला कदम था)।

सत्ता में बैठे लोगों (और विशेष रूप से उनके हरित अग्रगामी) की पाखंडता जन्म नियंत्रण के प्रति उनके रुख में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वे इसे तब भी बाधित करते हैं जब यह स्वतः उत्पन्न होता है (जैसा कि लंबे समय तक औद्योगिक देशों में और उदाहरण के लिए थाईलैंड में भी हुआ था), अधिक बच्चे होने के खिलाफ निवारकों के बजाय प्रसव के लिए कर प्रोत्साहनों के माध्यम से, साथ ही भरपूर प्रचार और »परामर्श« के माध्यम से। (यह बात मई 2026 के आखिरी हफ्ते में स्विस सरकार के प्रचार में साफ तौर पर देखी जा सकती थी, जिसका उद्देश्य "10-मिलियन-स्विट्ज़रलैंड" [और नहीं!]

जनमत संग्रह को "मूर्खों" यानी ऑरवेल के भेड़ों द्वारा पलटा जाना था। उदाहरण के लिए, एक आँसू भरे दादा को घटती हुई आयातित सस्ती मजदूरी के कारण देखभाल की कमी की शिकायत करनी पड़ी, हालाँकि बेरोजगारी का उन्मूलन - जो आखिरकार जन्म नियंत्रण के बाद अनिवार्य रूप से होता है - वास्तव में पेंशनभोगियों की देखभाल के लिए पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा निधि मुक्त कर रहा है। हालाँकि, पूर्ण रोजगार फिर से "रोजगारियों" को हड़ताल करने में सक्षम बनाता है, और असली समस्या ठीक यही है, और कहीं नहीं। (मार्क्स ने इसे »मजदूरों के बीच मुक़ाबला« कहा, जिसके परिणाम मजदूरों का वेतन में कटौती होती है।)

हमारे ग्रह की अतिजनसंख्या ने पहले ही उस तथाकथित 'जैव विविधता' के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर दिया है – सुमात्राई गैंडा या यांग्त्ज़े डॉल्फिन केवल कुछ उदाहरण हैं जिन्हें स्मृति के लिए प्रतीक के रूप में लिया गया है; कीड़े-मकोड़े शायद इससे भी बुरी हालत में हैं – अपने दादा-दादी से पूछिए! इसी आधार पर, इससे बचने का कोई और रास्ता नहीं है, चाहे अब कोई भी स्वैच्छिक »हरित« मूर्ख कितनी भी बकवास कर ले, और इसे »छठी सामूहिक विलुप्ति« कहा जाता है। लेकिन यह पहली ऐसी घटना है जिसमें एक ही प्रजाति ने उस संभावित जैव द्रव्यमान (बायोमास) पर एकाधिकार कर लिया है जिसकी हमारी जीवमंडल अनुमति देता है; इससे पहले की पाँच घटनाएँ भूवैज्ञानिक या ब्रह्मांडीय कारकों (विशाल उल्कापिंड) के कारण हुई थीं। हालांकि: एक समाधान (भले ही बहुत कुछ पहले ही अपरिवर्तनीय रूप से बर्बाद और नष्ट हो चुका है) केवल वैश्विक स्तर पर ही संभव है; अन्यथा, जानबूझकर गरीब बनाए गए देश वैश्विक हड़ताल तोड़ने वालों के रूप में काम करेंगे।

हमारी धरती पर अत्यधिक जनसंख्या ने उस चीज़ का बड़ा हिस्सा पहले ही नष्ट कर दिया है जिसे 'जैव-विविधता' (biodi-versity) कहा जाता है - सुमात्रा का गैंडा या यांग्त्ज़ी डॉल्फ़िन इसके कुछ उदाहरण हैं; कीड़े-मकोड़ों की हालत तो शायद और भी खराब है - अपने दादा-दादी से पूछकर देखिए! इस आधार पर, इससे बचने का कोई और रास्ता नहीं है, चाहे कोई स्वैच्छिक 'हरित' मूर्ख अब कितना भी बकवास कर ले, और इसे 'छठी सामूहिक विलुप्ति' कहा जाता है। लेकिन यह पहली ऐसी घटना है जिसमें एक ही प्रजाति ने हमारे जीवमंडल (biosphere) में मौजूद कुल बायोमास (जीव-द्रव्यमान) पर अपना एकाधिकार कर लिया है; इससे पहले की पांच घटनाएं भूवैज्ञानिक या ब्रह्मांडीय कारकों (विशाल उल्कापिंड) के कारण हुई थीं। हालाँकि: एक समाधान (भले ही बहुत कुछ पहले ही अपरिवर्तनीय रूप से बर्बाद और नष्ट हो चुका है) केवल वैश्विक स्तर पर ही संभव है; अन्यथा, जानबूझकर गरीब बनाए गए देश वैश्विक हड़ताल तोड़ने वाले के रूप में काम करेंगे। हालाँकि, इसका समाधान (भले ही बहुत कुछ ऐसा है जिसे अब कभी वापस नहीं लाया जा सकता और जो पूरी तरह नष्ट हो चुका है) केवल वैश्विक स्तर पर ही संभव है; वरना, जिन देशों को जानबूझकर गरीब रखा गया है, वे वैश्विक प्रयासों में बाधा डालने का काम करेंगे।

इसलिए हमारा नारा है:



जन्म नियंत्रण, काम के समय में कटौती, जाग्रतिक समन्ता

हथौड़े और दरांती देखकर घबराएँ नहीं। वे केवल इस बात का प्रतीक हैं कि हम इस ग्रह पर केवल उपयोगी लोगों को चाहते हैं (जिसमें स्वाभाविक रूप से डॉक्टर, शिक्षक और इंजीनियर जैसे अउत्पादक पेशे शामिल हैं, लेकिन अरबपति,

पेशेवर झूठे और रा सियासत खोर नहीं)।

हम पुरजोर सिफ़ारिश करते हैं कि आप हमारी पत्रिका KETZERBRIEFE (धर्मद्रोहियों के पत्र)पढ़ें, जिसमें विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाती है (अन्याय और झूठ की व्यवस्था में, इसे हासिल करने के लिए बेशक कुछ प्रयास करना पड़ता है), क्योंकि यह प्रचार की बौछार का सामना करने और अनुपालन का विरोध करने में आसान बनाता है।

केवल इसी आधार पर ही प्रश्न "क्या किया जाए?" पर एक अनुशासित चर्चा वास्तव में शुरू हो सकती है।

Contact:
Bund gegen Anpassung
Postfach 254, D - 79002 Freiburg
E-Mail: bund-gegen-anpassung@gmx.net
www.bund-gegen-anpassung.com